Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(3), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

# भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द के शैक्षिक दर्शन का योगदान

**डा0 राधारानी सिंह**
असि0 प्रोफेसर
शिक्षा शास्त्र विभाग
आर्य कन्या डिग्री0 कालेज

## सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को समाहित किया गया है। जिसका उद्देश्य एक समृद्धशाली नयी शिक्षा नीति बनाना है। जो पूरे विश्व का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करें। भारतीय ज्ञान परम्परा हमारी संस्कृति, वेदों पर आधारित शिक्षा पद्धति है। जो भारतीय संस्कृति के मूल्यों को अपने में समाहित किए हुए है। वेदों का ज्ञान विज्ञान की प्रमाणिकता पर आधारित है। वेदों की प्रमाणिकता में विश्वास करने वाले छः अस्तित्व दर्शन न्याय वैशेषिक, सांख्य,योग , मीसांसा और वेदान्त। वेदान्त, दर्शन में वेद , उपनिष , स्मृति , पुराण, , न्याय , वैशेषिक सांख्य आदि सभी दार्शनिक सम्प्रदायों का सार पाया जाता है। इसे वेद या ज्ञान का अन्त कहा जाता है। शंकराचार्य , जीवन और शिक्षा को एक ही मानते है। जीवन का अवतरण मात्र भौतिक सुख और समृद्धि का भोग करने के लिए नहीं हुयी वरन् ज्ञान अर्जित करने के लिए हुआ है। शिक्षा से व्यक्ति का आचरण विचार सुसंस्कृत उत्कृष्टतर हो जाता है। जिससे उत्तम समाज का निर्माण होता है। उत्तम समाज में ही उन्नत राष्ट्र तथा समृद्ध एंव शान्तिमय विश्व की कल्पना निहित है। सन्दर्भः भारतीय ज्ञान परम्परा के अर्न्तगत वेद, वेदांग उपनिषद, श्रुति स्मृति आधारित विभिन्न धर्मशास्त्र दर्शनशास्त्र अर्थशास्त्र शिक्षाशास्त्र नाट्य शास्त्र प्रबन्ध विज्ञान इत्यादि ज्ञान भण्डार है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने फिर से शिक्षा को भारत के मूल प्राण व स्वभाव से जुड़ने का मार्ग प्रथस्त किया है।स्वामी विवेकानन्द का प्रिय सन्देश "उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वाराष्ठि बोध अर्थात उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरूषों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। स्वामी विवेकानन्द ने विद्यार्थियों के लिए कहा मनुष्य को वीर, उद्यमी, निर्भीक और स्वतन्त्र विचारों वाला होना चाहिए।

**प्रस्तावना–**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को भारतीय ज्ञान के समग्रता के साथ समावेशी और सांस्कृतिक रूप में निहित दृष्टिकोण की ओर एक परिवर्तन को प्रदर्शित करती है। कुबेर सिंह गुरुपंच के अनुसार भारतीय ज्ञान विधाओं से सम्बन्धित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अत्यन्त मजबूत स्थिति की ओर ले जाते हुए प्रतीत होता है। भारतीय ज्ञान विधाओं को सम्मलित करने का एक प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान के साथ राष्ट्रीय एकता की भावना की बढ़ावा देते हुए विद्यार्थीयों में भारतीय संस्कृति विरासत से परिचित करना और उसकी समृद्धता से अवगत कराने के साथ उसके प्रति सम्मान के भाव को विकसित करना।

भारतीय शिक्षा प्रणाली 2020 भारतीय संस्कति में निहित ज्ञान की परम्पराओं के साथ–साथ व्यवहारिक ज्ञान, प्रशिक्षण व व्यवसायिक ज्ञान को एकीकरण करती है। इन्दर सिंह परमार के अनुसार भारतीय ज्ञान परम्परा मात्र सैद्धन्तिक न होकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनो में समाहित किए हुए है। भारतीय मूल्य जो 21वीं सदी में विद्यार्थियों में देखने को कम मिलते हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(3), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

तकनीकि ज्ञान व विधाओं ने विद्यार्थियों के सोचने समझने की शाक्ति को जैसे क्षीण कर दिया है। उन भारतीय ज्ञान मूल्यों की पुनः स्थापना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो सकें। भारतीय ज्ञान परम्परा स्वामी विवेकानन्द स्वामी दयानन्द, डा राधा कृष्णनन, रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे महान पुरुषों का निर्माण करने में सक्षम थी। आज की शिक्षा तो मानव को मनुष्य बनाने में अक्षम प्रतीत हो रही है हमें पुनः अपने मूल्यों को अपनी शिक्षा प्रणाली अर्थात राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में समाहित करके भारतीय ज्ञान परम्परा की ओर ध्यान केन्द्रित करना होंगा।

## स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शनः–

महर्षि दयानन्द ने माना है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्तर निम्न, बेरोजगारी में बढ़ोत्तरी, अनुशासनहीनता में बढ़ोतरी चारित्रिक पतन का निदान करने में असफल है। आदर्शों पर आधारित शिक्षा होनी चाहिए उनके अनुसार चारो वर्गो के लिए समान शिक्षा स्त्रीयों के लिए शिक्षा जन साधारण की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा मातृ भाषा पर आधारित शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है।

महर्षि दयानन्द वैश्विक स्तर में कर्म योग का ज्ञान आध्यामिकता व क्रियात्मकता पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परम्परा नें आध्यात्किता व वैज्ञानिकता दोनों को समाहित किया। समाजिक सुधार, अध्यात्मिक चिन्तन व वैज्ञानिक उन्नति को भारतीय जन प्रणाली में समाहित किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसारः– महान गुरु दयानन्द नें जीवन के सब अंगो को प्रदीप्त कर दिया। एक शास्त्र, एक देवता एक भाषा और एक संस्कृति की प्रतिष्ठा कर वे भारतीय समाज को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सर्वथा समर्थ देखना चाहते थे। यदुनाथ सरकार ने कहा जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बैठाया जोयगा। स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा सद्गुणों की प्राप्ति है।

माता–पिता का कर्तव्य है वे अपने बालको के लिए शिक्षा की व्यवस्था करे जो माता–पिता ऐसा नहीं करते वे माता–पिता बालक के शत्रु के समान है। बच्चे को पांच वर्ष तक माता, आठ वर्ष तक पिता के द्वारा तत्पश्चात् आचार्य के पास शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेज देना चाहिए। स्वामी दयानन्द के अनुसार स्त्री पुरुषों को बिना भेदभाव के शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है।

## स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन :–

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का आधार भारतीय वेदान्त और उपनिषद ही रहे है। सभी प्रकार लौकिक व परालौकिक ज्ञान मनुष्य के मन में समाहित है। शिक्षा मनुष्य के मन में उपस्थित ज्ञान का विकास व प्रकटीकरण है। हमारी शिक्षा प्रणाली मनुष्य मे कोई गुण नहीं उत्पन्न करती यह मनुष्य का निर्माण करने वाली शिक्षा नहीं है। यह शिक्षा मनुष्य को जीवन संग्राम के लिए नहीं तैयार करती वर्तमान शिक्षा प्रणाली मनुष्य को मशीन बना रही है। इससे लीपि वर्ग का निर्माण अधिक हो रहा है। मनुष्य मे ं हीन भावना का विकास अधिक हो रहा है। बच्चे रट–रट कर तोता बन रहे मस्तिष्क विकसित नही हो पा रहा।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने रोम्या रोला को लिखा अगर तुम भारत के विषय में जानना चाहते हो तो विवेकानन्द का अध्ययन करो। स्वामी विवेकानन्द वेदान्त दर्शन में विश्वास करते है। वेदान्त के तीन रूप है। द्वैत विसिष्टाकेंत, और अद्वैत। स्वामी जी अद्वैतवादी है। स्वामी जी को ईश्वर में विश्वास है। ईश्वर सर्वशाक्तिमान निराकार और एक। ईश्वर अनन्त अस्तित्व अनन्त ज्ञान और आनन्त आनन्द है। ज्ञान के बिना प्रेम और प्रेम के बिना ज्ञान नहीं हो सकता। स्वामी विवेकानन्द मानव के अस्तित्व पर बहुत आस्था एवं विश्वास रखते रहे है। स्वामी जी के अनुसार मनुष्य परमात्मा का ही अंश है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(3), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

स्वामी जी ने शिक्षा के विषय में कहा आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते है जिसने कुछ परिक्षाएँ पास कर ली हो। भाषण योग्य हो गया हो वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करे चरित्र का निर्माण करें जो समाज सेवा की भावना को विकसित करे शेर जैसा साहस उत्पन्न करे। जे विचार जीवन निर्माण में सहायक हो उनकी अनुभूति करना ही शिक्षा है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार यदि तुम केवल पॉच परखे हुए विचारो को आत्मसात कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो तो तुम एक पूरे ग्रन्थालय को कांठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हो यदि शिक्षा का अर्थ जानकारी ही होता तो पुस्तकालय संसार के सबसे बड़े सन्त हो जाते। शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की सभिव्यक्ति है। स्वामी जी का मत है। जब तक हम भौतिक दृष्टि से सुखी नहीं होते तब तक ज्ञान भाक्ति और योग ये सब कल्पना की ही वस्तु है। सुप्रसिद्ध बंगला लेखक सत्येन्द्र नाथ मजूमदार ने विवेकानन्द चरित्र नाम जीवनी लिखी

अतः पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर शिक्षा का अर्थ ज्ञान की प्राप्ति से है। जिससे जीवन निर्माण हो मनुष्यत्व आये चरित्र गठन हो, मन का बल बढ़े बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बने। स्वामी जी ने नारियों की समस्त समस्याओं का एकमात्र कारण शिक्षा का अभाव माना। पुरुष व नारी में वही एक ही आत्मा परमशक्ति विद्यमान है। नारियों को पुरुष के समकक्ष मानते हुए सम्मान की बात कही। जिस देश मे नारी सम्मान नहीं होता वह विकास को नहीं प्राप्त कर सकता।

डा. नन्दनी के राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसन्धान केन्द्र के अनुसार अंग्रेजी के पढ़ाई से मस्तिष्क का एक हिस्सा सक्रिय होता है जबकि हिन्दी की पढ़ाई से मस्तिष्क के दोनो हिस्से समान रूप से साक्रिय होते है। आइजेक पिटमैन के अनुसार यदि संसार में कोई सर्वांगंपूर्ण लीपि है तो वह देवनागरी लीपि है।

**निष्कर्ष –**

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार :–महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन वैदिक दर्शन है। वेदों की महत्ता को स्वीकार किया ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया को सर्वोत्तम कहा। आर्य समाज की स्थापना की।महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज में प्याप्त कुरीतियों अन्ध–विश्वासों, रूढियों और परम्पराओं का विरोध किया। मूर्ति पूजा, जाति–प्रथा, बाल विवाह का विरोध किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार शिक्षा सद्गुणों की प्राप्ति है।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार :– स्वामी विवेकानन्द का प्रिय सन्देश "उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वाराष्ठि बोध अर्थात उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरूषों के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। स्वामी विवेकानन्द ने विद्यार्थियों के लिए कहा मनुष्य को वीर, उद्यमी, निर्भीक और स्वतन्त्र विचारों वाला होना चाहिए। वीर बनों हमेशा कहो मै निर्भय हूँ, डरो मत भय मृत्यु है, भय पाप है। भय नर्क है। भय अधार्मिकता है। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता है। मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है, मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर व्यवहारिक शिक्षा पर बल देते हुए कहा तुमको कार्य के सब क्षेत्रों में व्यवहारिक बनना पडेगा। जो शिक्षा प्रेम और राष्ट्रीयता की प्रेरणा नहीं देती उसे राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1) नई शिक्षा नीति 2020।
2) डा0 मालती सारस्वत और प्रो0 एस0एल0 गौतम भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास।
3) डा0. सीता राम जायसवाल शिक्षा का समाजिक आधार।
4) डा रामशकल पाण्डेय , भारतीय शिक्षा की समसामजिक समस्याएं
5) प्रो0 गिरीश पचौरी– विश्व के महान शिक्षाशास्त्री।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:1(3), January 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

6) भारतीय ज्ञान परम्परा – विकीपीडिया।
7) भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय , राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारूप।
8) सोनू रचक एवं प्रो0–मो. फेज अहमद भारतीय ज्ञान पम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति की के आलोक में ज्योतिबा फुले, डा0 अम्बेडकर और पेरियार के शैक्षिक दर्शन का समकालीन संदर्भ एक समीक्षात्मक अध्ययन।
9) अतुल कोठारी, – राष्ट्रीय सचिव, , प्रेरणा संवाद भारतीय संस्कृति उत्थान, भारतीय ज्ञान परम्परा का शिक्षा में समावेश।
10) कुबेर सिंह गुरुपंच एवं राजु चन्द्राकार–भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
11) सागर सिरोला डा. देवकी सिरोला–भारतीय ज्ञान–परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 , शोध ग्रन्थ ।